सूचीपत्र ।

विषय

विषय

श्रीगणेशाय नमः

व्याकरण की उपक्रमणिका।

वर्णनिर्णय (Alphabet)।

(१) अ, इ, उ, क, ख, ग इत्यादि एक एक को वर्ण (letter) कहते हैं। वर्ण दो प्रकार के हैं—स्वर और व्यञ्जन।

स्वर (अच्) वर्ण (vowels)।

(२) अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ, ए ऐ ओ औ, इन्हीं तेरह वर्णों को स्वर कहते हैं। स्वर दो प्रकार के हैं ह्रस्व (short) और दीर्घ (long)। अ इ उ ऋ ऌ, येही पांच ह्रस्व स्वर हैं। आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ, येही आठ दीर्घ स्वर हैं। ऌकार दीर्घ नहीं है।

व्यञ्जन (हल्) वर्ण (consonants)।

(३) क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न, प फ ब भ म, य र ल व, श ष स ह। (ं) (ः) ये ३५ व्यञ्जन वर्ण हैं।

(५) क ख ग घ ङ, इन का उच्चारण स्थान जिह्वामूल (root of the tongue) है। इस लिये इन्हें जिह्वामूलीय (linguocradicals) कहते हैं।

(६) इ ई च छ ज झ ञ य श, इन के उच्चारण का स्थान तालु (palate) है। इस लिये तालव्य वर्ण (palatals) कहलाते हैं।

(७) ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष, इन के उच्चारण का स्थान मूर्द्धा है। इसलिये इन्हें मूर्द्धन्यवर्ण (cerebials) कहते हैं।

(८) ऌ त थ द ध न, ल स इन के उच्चारण का स्थान दन्त (teeth) है। इसलिये ये दन्त्यवर्ण (dentals) कहलाते हैं।

(९) उ ऊ प फ ब भ म, ᳵप ᳵफ इन के उच्चारण का स्थान ओष्ठ (lips) है। इसलिये इन को ओष्ठ्य वर्ण (labials) कहते हैं।

(१०) ए ऐ, इन के उच्चारण का स्थान कण्ठ और तालु है इस लिये इन को कण्ठतालव्य वर्ण (palatogutturals) कहते हैं।

(११) ओ औ, इन का उच्चारणस्थान कण्ठ और ओष्ठ है इस लिये इन को कण्ठोष्ठ्य वर्ण (labio-gutturals) कहते हैं।

जिन में से क से म तक के पचीस वर्णों को स्पर्श* कहते हैं। स्पर्श वर्ण पांच वर्ग में विभक्त हैं। क ख ग घ ङ, ये पांच कवर्ग (1st class) हैं, च छ ज झ ञ, ये पांच चवर्ग (2nd class) हैं, ट ठ ड ढ ण, ये ५ टवर्ग (3rd class) हैं। त थ द ध न, ये पांच तवर्ग (4th class) हैं। प फ ब भ म, ये ५ पवर्ग (5th class) हैं। य र ल व ये ४ अन्तःस्थ† वर्ण कहलाते हैं। श ष स ह, इन का नाम ऊष्म‡ है। (ं) अनुस्वार और (ः) विसर्ग इन दोनों वर्णों को अयोगवाह कहते हैं।

वर्णों के उच्चारण के स्थान।

(Letters and their seats of utterance)

(४) अ, आ, ह इन के उच्चारण का स्थान कण्ठ (throat) है इस लिये ये कण्ठ्य वर्ण (gutturals) कहलाते हैं।

---

* कण्ठ, तालु आदि स्थानों को स्पर्श कर के उच्चारित होते हैं, इसलिये इन को स्पर्श वर्ण कहते हैं।

† स्पर्श और ऊष्म वर्णों के बीच में हैं, इसलिये ये अन्तःस्थ वर्ण कहलाते हैं।

‡ इन के उच्चारण करने में मुंह से ऊष्मा अर्थात् भाप कुछ विशेष कर के निकलती है, इसलिये ये ऊष्म वर्ण कहलाते हैं।

(१२) अन्तःस्थ वकार का उच्चारणस्थान दन्त और ओष्ठ है। इस लिये इस को दन्तौष्ठ्य वर्ण (dentalolabials) कहते हैं।

(१३) (ं) अनुस्वार का उच्चारणस्थान नासिका (nose) है, इसलिये इस को अनुनासिक (nasals) वर्ण कहते हैं।

(१४) (ः) विसर्ग और अनुस्वार भी आश्रय स्थान-भागी हैं अर्थात् जब जिस स्वर वर्ण के आगे रहता है, तब उस स्वर वर्ण का उच्चारणस्थान विसर्ग और अनुस्वार का उच्चारणस्थान होता है।

(१५) ङ ञ ण न म ये सब जिह्वामूल तालु आदि की नाईं नासिका से भी उच्चारित होते हैं। इस लिये इन को अनुनासिक वर्ण भी कहते हैं।*

सन्धिप्रकरण (Conjunction of letters)।

सन्धि।

दो वर्ण परस्पर निकटस्थ (समीप) होने से भिन्न रूप

---

* ये सब स्थान पाणिनीय शिक्षा के अनुसार लिखे गये हैं।

हो मिल जाते हैं। इसी मिलने को सन्धि कहते हैं। सन्धि दो प्रकार की है, स्वरसन्धि और व्यञ्जन सन्धि। स्वर वर्ण के साथ स्वर वर्ण की जो सन्धि होती है उस को स्वरसन्धि कहते हैं और व्यञ्जन वर्ण के साथ व्यञ्जन वर्ण की अथवा व्यञ्जन वर्ण के साथ स्वर वर्ण की जो सन्धि होती है उस को व्यञ्जनसन्धि कहते हैं।

स्वरसन्धि (Conjunction of Vowels)।

(१६) यदि अकार के अनन्तर अकार वा आकार होवे तो दोनों मिल कर आकार होता है और आकार पूर्व वर्ण में संयुक्त होता है। यथा, शश अङ्कः, शशाङ्कः; उत्तम अङ्गम्, उत्तमाङ्गम्; अथ अपि, अथापि; रत्न आकरः, रत्नाकरः; देव आलयः, देवालयः; कुश आसनम्, कुशासनम्।

(१७) यदि आकार के अनन्तर अकार वा आकार होवे तो दोनों मिल कर आकार हो जाता है और आकार पूर्व वर्ण में युक्त हो जाता है। यथा, दया अर्णवः, दयार्णवः; दया अर्थः, दयार्थः; लता अन्तः, लतान्तः; दया आलयः, दयालयः; गदा आघातः, गदाघातः; विद्या आलयः, विद्यालयः।

(१८) यदि ह्रस्व इकार के अनन्तर इ अथवा ई होवे तो दोनों मिल कर दीर्घ ईकार हो जाता है; ईकार पूर्व वर्ण में युक्त हो जाता है। यथा, गिरि इन्द्रः, गिरीन्द्रः; अति इव, अतीव; मति इनिः, मतीनिः; कवि ईश्वरः, कवीश्वरः; क्षिति ईशः, क्षितीशः; प्रति इक्षा, प्रतीक्षा।

(१९) यदि दीर्घ ईकार के आगे इ अथवा ई रहे तो दोनों मिल कर दीर्घ ईकार हो जाता है; ईकार पूर्व वर्ण में युक्त हो जाता है। यथा मही इन्द्रः, महीन्द्रः; महती इच्छा, महतीच्छा; लक्ष्मी ईशः, लक्ष्मीशः; पृथ्वी ईश्वरः, पृथ्वीश्वरः।

(२०) यदि ह्रस्व उकार के आगे उ अथवा ऊ रहे तो दोनों मिल कर दीर्घ ऊकार होता है। ऊकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है। यथा, विधु उदयः, विधूदयः; मधु उत्सवः, मधूत्सवः; साधु उक्तम्, साधूक्तम्; लघु ऊर्मिः, लघूर्मिः; गुरु ऊरुः, गुरूरुः।

(२१) यदि दीर्घ ऊकार के आगे उ अथवा ऊ रहे तो दोनों मिल कर दीर्घ ऊकार होता है। ऊकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है। यथा, वधू उत्सवः,

वधूत्सवः; स्वयम्भू उदयः, स्वयम्भूदयः; भू ऊर्द्धम्, भूर्द्धम्; वधू ऊहनम्, वधूहनम्।

(२२) यदि ऋकार के आगे ऋकार रहे तो दोनों मिल कर दीर्घ ॠकार होता है; ॠकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है। यथा पितृ ऋणम्, पितॄणम्; मातृ ऋद्धिः, मातॄद्धिः।

(२३) यदि अकार के आगे इ अथवा ई रहे तो दोनों मिलकर एकार होता है। एकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है। यथा, देव इन्द्रः, देवेन्द्रः; पूर्ण इन्दुः, पूर्णेन्दुः; गण ईशः, गणेशः; अव ईक्षणम्, अवेक्षणम्।

(२४) यदि आकार के आगे इ अथवा ई रहे तो दोनों मिल कर एकार होता है। एकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है। यथा, महा इन्द्रः, महेन्द्रः; लता इव, लतेव; रमा ईशः, रमेशः; महा ईश्वरः, महेश्वरः।

(२५) यदि अकार के आगे उकार अथवा ऊकार रहे तो दोनों मिल कर ओकार होता है। ओकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है। यथा नील उत्पलम्, नीलोत्पलम्; सूर्य उदयः, सूर्योदयः; एक ऊनविंशतिः एकोनविंशतिः; इह ऊर्द्धम्, इहोर्द्धम्।

(२६) यदि आकार के परे उकार अथवा ऊकार रहे तो दोनों मिलकर ओकार होता है। ओकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है। यथा महा उदयः, महोदयः ; गङ्गा उदकम्, गङ्गोदकम् ; गङ्गा ऊर्मिः, गङ्गोर्मिः ; महा ऊर्मिः, महोर्मिः।

(२७) यदि अकार के आगे ऋ रहे तो ऋ के स्थान में र् होता है। और र् पर वर्ण के मस्तक पर चला जाता है। यथा, देव ऋषिः, देवर्षिः हिम ऋतुः, हिमर्तुः।

(२८) यदि आकार के आगे ऋकार होवे तो आकार के स्थान में अकार होता है और ऋकार के स्थान में र् होता है। र् पर वर्ण के मस्तक पर चला जाता है। यथा, महा ऋषिः ; महर्षिः; देवता ऋषभः, देवतर्षभः।

(२९) यदि अकार के परे ए अथवा ऐ रहे तो दोनों मिलकर ऐकार होता है। ऐकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है। यथा, अद्य एव, अद्यैव; एक एकम्, एकैकम्।

(३०) यदि आकार के आगे ए अथवा ऐ रहे तो दोनों मिलकर ऐकार होता है। ऐकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है। यथा, सदा एव सदैव; तथा एतत्,

तथैतत्; महा ऐरावतः, महैरावतः; महा ऐश्वर्य्यम्, महैश्वर्य्यम्।

(३१) यदि अकार के परे ओ अथवा औ रहे तो दोनों मिल कर औकार होता है। औकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है। यथा; जल ओघः, जलौघः; ग्राम ओकः, ग्रामौकः; विष औदार्य्यम्, विषौदार्य्यम्; गत औत्सुक्यः, गतौत्सुक्यः।

(३२) यदि आकार के परे ओ अथवा औ रहे तो दोनों मिल कर औकार होता है। औकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है। यथा, महा ओषधिः, महौषधिः; सदा ओदनम्, सदौदनम्; महा औदार्य्यम्; महौदार्य्यम्; सदा औत्सुक्यम्, सदौत्सुक्यम्।

(३३) ह्रस्व इ के आगे इ ई के सिवाय दूसरे स्वर वर्ण के रहने से ह्रस्व इ के स्थान में य् होता है। य् पूर्व वर्ण में युक्त होता है और आगे का स्वर यकार में मिल जाता है। यथा, यदि अपि, यद्यपि; अति आचारः, अत्याचारः; अभि उदयः, अभ्युदयः; प्रति ऊहः, प्रत्यूहः; मुनि ऋषभः, मुन्यृषभः; प्रति एकम्, प्रत्येकम्; अति ऐश्वर्य्यम्, अत्यैश्वर्य्यम्; पचति ओदनम्, पचत्योदनम्; अति औदार्य्यम्, अत्यौदार्य्यम्।

(३४) दीर्घ ई के आगे इ ई के सिवाय दूसरे स्वर वर्ण के रहने से दीर्घ ई के स्थान में य् होता है। य् पूर्व वर्ण में युक्त होगा है और आगे का स्वर यकार में युक्त हो जाता है। यथा नदी अम्बु, नद्यम्बु; देवी आगता, देव्यागता; सखी उत्तम्, सख्युत्तम्; शशी वर्द्धनः, शश्यूर्द्धनः; षष्ठी ऋषभः, षष्ठ्यृषभः; गोपी एषा, गोप्येषा; षष्ठी ऐरावतः, षष्ठ्यैरावतः; सरस्वती ओघः, सरस्वत्योघः; वाणी औचित्यम् वाण्यौचित्यम्।

(३५) ह्रस्व उ के परे उ ऊ से भिन्न स्व वर्ण के रहने से ह्रस्व उ के स्थान में व् होता है व् पूर्व वर्ण में युक्त होता है और आगे का स्व वकार में युक्त होता है। यथा मनु अयः, मन्वय सु आगतम्, स्वागतम्; मधु इदम्, मध्विद साधु ईरितम्, साध्वीरितम्; मधु ऋते, मध्वृते अनु एषणम्, अन्वेषणम्; अनु ऐशिष्ट, अन्वैशि पचतु ओदनम्, पचत्वोदनम्; ददातु औषधम् ददात्वौषधम्।

(३६) ऊ के परे उ ऊ से भिन्न स्वर व रहने में, दीर्घ ऊ के स्थान में व् होता है। व् पू वर्ण में युक्त होता है और आगे का स्वर व् में युक्त हो

है। यथा सरयू अम्बु, सरय्वम्बुः वधू आदिः वध्वादिः ; तनू इन्द्रियम्, तन्विन्द्रियम् ; तनू ईश्वरः, तन्वीश्वरः ; सरयू एधितम्, सरय्वेधितम् ; वधू ऐश्वर्य्यम्, वध्वैश्वर्य्यम् ; सरयू ओघः, सरय्वोघः ; वधू औदार्य्यम्, वध्वौदार्य्यम्।

(१७) ऋ के परे ऋ से भिन्न स्वर वर्ण के रहने से ऋ के स्थान में र् होता है। र् पूर्व वर्ण में नीचे युक्त हो जाता है और आगे का स्वर र् में युक्त होता है। यथा, पितृ अनुमतिः, पित्रनुमतिः; पितृ आदेशः, पित्रादेशः; पितृ इच्छा, पित्रिच्छा ; पितृ ईहितम्, पित्रीहितम्; पितृ उपदेशः, पित्रुपदेशः; पितृ ऊहः, पित्रूहः ; पितृ एषणा, पित्रेषणा ; पितृ ऐश्वर्य्यम्, पित्रैश्वर्य्यम् ; पितृ ओकः, पित्रोकः ; पितृ औदार्य्यम्, पित्रौदार्य्यम्।

(१८) ए के परे स्वर वर्ण रहने से एकार के स्थान में अय् होता है, अकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है और आगे का स्वर यकार में युक्त होता है। यथा, शे अनम्, शयनम् ; ने अनम्, नयनम्; जे अति, जयति ; सखे अः, सखयः ; दे आते, दयाते ; अशे आताम्, अशयाताम् ; शे इतम्, शयितम् ; अशे इट, अशयिट ; जे ईत, जयीत ; दे ईरन, दयीरन ; दे ए, दये ; शे, ए शये

(३९) ए के परे स्वर वर्ण रहने मे ऐकार के स्थान में आय् होता है। आकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है, और आगे का स्वर यकार में युक्त होता है। यथा, विनै अकः विनायकः, सखै अकः सखायकः ; रै आ, राया; रै इ, रायि ; रै ये, रायि ; रै ओः, रायोः।

(४०) ओकार के परे स्वर वर्ण रहने मे ओकार के स्थान में अव् होता है। अकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है। और आगे का स्वर वकार में युक्त होता है। यथा, भो अनम्, भवनम् ; पो अनः पवनः ; श्रो अणम् श्रवणम् ; गो आ, गवा ; भो इता, भविता ; पो इत्रम्, पवित्रम् ; गो ऐ, गवे गो ओः, गवोः।

(४१) औकार के परे स्वर वर्ण रहने मे औकार के स्थान में आव् होता है। आकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है और आगे का स्वर वकार में युक्त होता है। यथा, पौ अकः, पावकः ; नौ आ, नावा ; भौ इनी, भाविनी; भौ उकः, भावुकः ; नौ ए, नावे ; नौ ओः, नावोः ; नौ औ, नावौ।

ज्ञाकम्; महन् झम्झनम्, महज्झञ्झनम् ;
झनत्कारः, तञ्झनत्कारः ।

(४५) यदि दन्त्य न् के आगे ज अथवा झ होवे तो न् के स्थान मे ञ होता है। यथा, जयः, महाञ्जयः; राजन् जाग्रहि, राजञ्जाग्रहि; भवान् जीवतु, भवाञ्जीवतु; सघन् झङ्कारः, सघञ्झङ्कारः; विरमन् झनत्कारः, विरमञ्झनत्कारः गच्छन् झटिति, गच्छञ्झटिति ।

(४६) यदि पद के अन्त में त् अथवा द् के परे तालव्य श होवे तो त् और द् के स्थान में च् और श के स्थान छ होता है। यथा, जगत् शरण्यः, जगच्छरण्यः; महत् शकटम्, महच्छकटम्; तद् शरीरम्, तच्छरीरम्; एतद् शकाट्टीयम्, एतच्छकाट्टीयम् ।

(४७) यदि पद के अन्त के नकार के परे तालव्य शकार होवे तो न् के स्थान में ञ् और श के स्थान में छ होता है। यथा, महान् शम्भुः, महाञ्छम्भुः; यावन् शशः, यावञ्छशः; विद्वन् शठः, विद्वञ्छठः ।

(४८) यदि पद के अन्त के त् अथवा द् के परे ल होवे तो त् के स्थान में द् और द् के स्थान में

होता है। यथा, उत् हतः, उद्धतः ; उत् हरणम्, उद्धरणम्; महत् हसनम्, महद्धसनम् ; तद् हितम्, तद्धितम्; तद् हेयम् तद्धेयम्; विपद् हेतुः, विपद्धेतुः।

(४९) यदि च् अथवा ज् के परे दन्त्य न् होवे तो न् के स्थान में ञ् होता है। यथा, याच् ना, याच्ञा; यज् नः, यज्ञः ; जज् नाते, जज्ञाते ; जज् निषे, जज्ञिषे ; जज् निध्वे, जज्ञिध्वे; जज् ने, जज्ञे; राज् ना, राज्ञा ; राज् नी, राज्ञी।

(५०) यदि त् और द् के परे ट् और ठ् होवे तो त् और द् के स्थान में ट् होता है। यथा, तत् टलति, तट्टलति ; महत् टङ्कनम्, महट्टङ्कनम् ; तद् टीका, तट्टीका ; एतद् टङ्कारः, एतट्टङ्कारः ; सद् ठकारः, सट्ठकारः ; एतद् ठक्कुरः, एतट्ठक्कुरः।

(५१) यदि त् और द् के परे ड् अथवा ढ् होवे तो त् और द् के स्थान में ड् होता है। यथा उत् डीनः, उड्डीनः ; भवत् डमरुः, भवड्डमरुः ; तद् डिण्डिमः, तड्डिण्डिमः ; एतद् डामरः, एतड्डामरः ; उद् ढौकते, उड्ढौकते ; मद् ढालम्, मड्ढालम् ; एतद् ढक्का, एतड्ढक्का ; तद् ढुण्ढनम् तड्ढुण्ढनम्।

है । यथा, पतन् तरुः, पतंस्तरुः; महान् महान्
महांस्तडागः ; उपविशन् चाटुः, उपविशंश्चाटुः
गायन् छात्रः , गायंश्छात्रः; शिवन् टुङ्कारम्
शिवंस्टुङ्कारम् ; स्मृशन् पुष्पाणि, स्मृशंस्पुष्पाणि ।

(६०) यदि पद के अन्त में स्थित म् से
अन्तस्थ अथवा ऊष्म वर्ण होवे तो म् के स्थान
अनुस्वार होता है । यथा, सत्वरम् याति,
याति ; करुणम् रोदिति, करुणं रोदिति ; विद्या
लभते , विद्यां लभते ; भारम् वहति, भारं वहति
शय्यायाम् शेते, शय्यायां शेते ; कष्टम् सहते
कष्टं सहते ; मधुरम् हसति, मधुरं हसति ।

(६१) यदि स्पर्श वर्ण परे होवे तो पद
अन्त में स्थित म् के स्थान में अनुस्वार होता
अथवा जिस वर्ग का वर्ण पर पद में होवे उस
वर्ग का पञ्चम वर्ण होजाता है। यथा किम् करोति,
करोति, किङ्करोति; गृहम् गच्छ, गृहं गच्छ, गृहङ्गच्छ
क्षिप्रम् चलति, क्षिप्रं चलति, क्षिप्रञ्चलति; शत्रुम् ज
शत्रुं जहि, शत्रुञ्जहि ; नदीम् तरति, नदीं तरति
नदीन्तरति; धनम् ददाति, धनं ददाति, धनन्ददाति
स्तनम् धयति, स्तनं धयति, स्तनन्धयति; गुरुम् नमति
गुरुं नमति, गुरुन्नमति ; चन्द्रम् पश्यति, च

पुत्राः जाताः, पुत्रा जाताः ; बहवः हृष्टाः
पशुरा हृष्टाः; नराः दयावन्तः, नरा दयावन्तः; गजा
डीयन्ते, गजा डीयन्ते; निर्मिताः दीपाः, नि
दीपाः ; अश्वाः धावन्ति, अश्वा धावन्ति ;
नगाः, उन्नता नगाः; दृष्टाः वन्याः, दृष्टा वन्याः;
पीताः, नरा पीताः; भगिनीः मामाः, भगिनी मामाः
छात्राः पठन्ते, छात्रा पठन्ते; पुत्राः रथ्या
पुत्रा रथ्याः ; नराः क्षमन्ते, नरा क्षमन्ते ; वा
यान्ति, याता यान्ति; बालकाः हसन्ति, ..
हसन्ति ।

(७३) यदि स्वर वर्ण वा वर्ग के तृतीय ..
पञ्चम वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् पर भाग
होवे तो अ आ भिन्न स्वर वर्ण के आगे
के स्थान में र् हो जाता है । यथा, कविः अयम्
कविरयम् ; गतिः इयम्, गतिरियम्; रविः उदे
रविरुदेति ; श्रीः असौ, श्रीरसौ ; सुधीः ए
सुधिरपः ; बन्धुः आगतः, बन्धुरागतः; गु
उवाच, गुरुरुवाच ; वधूः एषा, वधूरेषा ;
इयम्, भूरियम् ; मातुः अर्पय, मातुरर्पय, दु
आह्वय, दुहितुराह्वय ; रवेः उदयः, रवेरुदयः;
उक्तम्, तैरुक्तम् ; विधोः अस्तगमनम्, विधोरस्त

मनम्; प्रभोः आदेशः, प्रभोरादेशः; गौः अयम्, गौरयम्; ऋषिः गच्छति, ऋषिर्गच्छति; हविः प्राणम्, हविर्प्राणम्; गुरुः जयति, गुरुर्जयति; कृतैः द्वारैः, कृतैर्द्वारैः; नवैः दमरभिः, नवैर्दमरभिः, गौः दौकते, गौर्दौकते; रवेः दर्शनम्, रविर्दर्शनम्; निः धनम्, निर्धनम्; दुः नीतिः, दुर्नीतिः; निः बन्धः, निर्बन्धः; निः भयः, निर्भयः; मुहुः मुहुः, मुहुर्मुहुः; पदिः योगः, पदिर्योगः; विधुः दीपते, विधुर्दीपते; वायुः वाति, वायुर्वाति; शिशुः हसति, शिशुर्हसति।

(७४) यदि स्वरवर्ण या वर्ग का तृतीय चतुर्थ पंचम वर्ण अथवा य र ल, व, ह परे होवे तो अकार के आगे र् के स्थान में जो विसर्ग होता है उस विसर्ग के स्थान में र् होता है। यथा, पुनः अपि, पुनरपि; पुनः आगतः, पुनरागतः; मातः इागतः, मातरिहागतः; मातः एव, मातरेव; अन्तः धानम्, अन्तर्धानम्; स्वः गतः, स्वर्गतः; भ्रातः आगच्छ, भ्रातरागच्छ; पितः अनुजन्यस्व, पितरनुजन्यस्व; मातः देहि, मातर्देहि; आवातः यद, आवातर्यद; दुहितः याहि, दुहितर्याहि।

(७५) पर भाग में र् होने से विसर्ग के स्थान

पुत्राः जाताः, पुत्रा जाताः ; मधुराः झङ्काराः, मधुरा झङ्काराः; नवाः डमरवः, नवा डमरवः; गजाः ढौकन्ते , गजा ढौकन्ते; निर्वाणाः दीपाः, निर्वाणा दीपाः ; अश्वाः धावन्ति, अश्वा धावन्ति ; उन्नताः नगाः, उन्नता नगाः; दृढाः बन्धाः, दृढा बन्धाः; नराः भीताः, नरा भीताः; अतीताः मासाः, अतीता मासाः ; छात्राः यतन्ते, ; छात्रा यतन्ते; पूताः रथ्याः, पूता रथ्याः ; नराः लभन्ते, नरा लभन्ते ; वाताः वान्ति, वाता वान्ति; बालकाः हसन्ति, बालका हसन्ति ।

(७१) यदि स्वर वर्ण वा वर्ग के तृतीय चतुर्थ पञ्चम वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह पर भाग में होवे तो अ आ भिन्न स्वर वर्ण के आगे विसर्ग के स्थान में र् हो जाता है । यथा, कविः अयम्, कविरयम् ; गतिः इयम्, गतिरियम्; रविः उदेति, रविरुदेति ; श्रीः असौ , श्रीरसौ ; सुधीः एषः सुधीरेषः ; बन्धुः आगतः , बन्धुरागतः; गुरुः उवाच, गुरुरुवाच ; वधूः एषा, वधूरेषा ; भूः इयम्, भूरियम् ; मातुः अंशय, मातुरंशय, दुहितुः आह्वय, दुहितुराह्वय ; रवेः उदयः , रवेरुदयः; तैः उक्तम् , तैरुक्तम्; विधोः अस्तगमनम् , विधोरस्त-

ाधेनम् ; मधोः आदेशः, मधोरादेशः; गौः अयम्, ौरयम् ; ऋषिः गच्छति, ऋषिर्गच्छति; हविः ाणम्, हविर्माणम् ; गुरुः जयति, गुरुर्जयति; तैः इष्टाभिः, कृतैरिष्टाभिः ; नवैः दमकभिः, नवै-मकभिः, गौः दीकते, गौर्दीकते ; रवेः दर्शनम्, वेर्दर्शनम्; निः धनम्, निर्धनम्; दुः नीतिः, दुर्नीतिः ाः बन्धः, निर्बन्धः ; निः भयः, निर्भयः मुहुः हुः, मुहुर्मुहुः; पतिः योगः, पतिर्योगः; विधुः ियते, विधुर्ध्रियते; वायुः वाति, वायुर्वाति; शिशुः सति, शिशुर्हसति ।

(७४) यदि स्वरवर्ण या वर्ग का तृतीय चतुर्थ पम वर्ण अथवा य र ल, व, ह परे होवे तो कार के आगे ह के स्थान में जो विसर्ग होता उस विसर्ग के स्थान में र होता है। यथा, पुनः पि, पुनरपि ; पुनः आगतः, पुनरागतः; मातः ागतः, मातरिहागतः; मातः एव, मातरेव; अन्तः ानम्, अन्तर्धानम् ; स्वः गतः, स्वर्गतः; प्रातः ागच्छ, प्रातरागच्छ; पितः अनुगच्छस्व, पितरनु-च्छस्व; भ्रातः देहि, भ्रातर्देहि; भ्रातः वद, भ्रातर्वद ; मुहितः याहि; दुहितर्याहि ।

(७५) पर भाग में र होने से विसर्ग के ...

में जो र् होता है उस का लोप हो जाता है
पूर्व का स्वर दीर्घ होता है। यथा, पितः
पितारक्ष ; निः रसः, नीरसः; निः रोगः, नीरो
विधुः राजते, विधू राजते; मातुः रोदनम्, म
रोदनम्।

(७६) यदि अकार को छोड़कर कोई
अथवा व्यञ्जन परे हो तो सः और एषः इन दो
पद के विसर्ग का लोप हो जाता है और लोप
पर सन्धि नहीं होती है। यथा सः आगतः
स आगतः ; सः इच्छति, स इच्छति ;
ईहते, स, ईहते ; सः उवाच, स उवाच ;
करोति, स करोति ; सः गच्छति, स गच्छति
सः चलति, स चलति ; सः हसति; स हसति
एषः आयाति, एष आयाति; एषः एति, एष ए
एषः धावति, एष धावति ; एषः रोदिति,
रोदिति; एषः वदति, एष वदति; एषः शेते,
शेते; एषः सहते, एष सहते।

(७७) यदि स्वर या वर्ग का तृतीय
पञ्चम वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् परे हो
भोः पद के विसर्ग का लोप हो जाता है।
होने पर सन्धि नहीं होती है। यथा, भोः
रीष, भो अम्बरीष; भोः ईशान, भो ईशान;

[illegible]मापते, भो रमापते; भोः गदाधर, भो गदाधर; [illegible]ो: जनमेजय, भो जनमेजय; भोः दामोदर, भो [illegible]ामोदर, भोः माधव, भो माधव ; भोः यदुपते, भो यदुपते।

णत्व विधान (Changes of 'न' into 'ण')

(७८) ऋ, ॠ, र और मूर्द्धन्य ष इन चार वर्णों के आगे दन्त्य न का मूर्द्धन्य ण हो जाता है। यथा, नृनाम्, नृणाम्; तिसृ नाम्, तिसृणाम्; चतसृ नाम्, चतसृणाम्; नॄ नाम्, नॄणाम्; भ्रातृ नाम्, भ्रातृणाम्; दातृ नाम्, दातृणाम्; चतुर् नाम्, चतुर्णाम्; दोष् ना, दोष्णा; पुष् ने, पुष्णे।

(७९) यदि स्वर वर्ण या कवर्ग, पवर्ग, य, व ह और अनुस्वार इन सब वर्णों का व्यवधान हो तौभी दन्त्य न के स्थान में ण हो जाता है। यथा, कारनम्, कारणम्; करा नाम्, कराणाम्; करि ना, करिणा; गुरु ना, गुरुणा; परे न, परेण; अर्के न, अर्केण; मूर्खे न, मूर्खेण; भूमे न, [illegible]; दर्पे न, दर्पेण; दर्भे न दर्भेण, रेफे न, रेफेण; दर्मे न, दर्मेण; द्रवे न, द्रवेण; रथे

विभक्ति की आकृति।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवच
प्रथमा (First Class)	अः	औ	अः
द्वितीया (Second Class)	अम्	औ	अः
तृतीया (Third Class)	आ	भ्याम्	भिः

सुत दुर्गाप्रसाद कृत, भाषाभाष्य लीलावती से-
"एकदशशतसहस्रायुतलक्षप्रयुतकोटयः क्रमशः।
अर्बुदमब्जं खर्वनिखर्वमहापद्मशंकवस्तस्मात् ॥१॥
जलधिश्चान्त्यं मध्यंपरार्धमिति दशगुणोत्तरं संज्ञाः
संख्यायाः स्थानानां व्यवहारार्थं कृताः पूर्वैः ॥१

पहिले स्थान को एक, दूसरे को दश, तीस
को शत, चौथे को सहस्र, पांचवें को अयुत, छं
को लक्ष, सातवें को प्रयुत, आठवें को कोटि, नौ
को अर्बुद, दशवें को अब्ज, ग्यारहवें को खर्व
बारहवें को निखर्व, तेरहवें को महापद्म, चौदह
को शङ्कु, पन्द्रहवें को जलधि, सोलहवें को अन्त्य
सत्रहवें को मध्य, और अठारहवें को परार्ध कह
हैं। ये प्रत्येक स्थान परस्पर दश गुण हैं अर्था
पहिले स्थान से दूसरा दशगुण, दूसरे स्थान

चतुर्थी (Fourth Class)	ए	भ्याम्	भ्यः
पञ्चमी (Fifth Class)	अः	भ्याम्	भ्यः
षष्ठी (Sixth Class)	अः	ओः	आम्
सप्तमी (Seventh Class)	इ	ओः	सु

किस शब्द में किस विभक्ति के योग करने से कैसा पद होता है सो क्रम से दिखाये जाते हैं। सम्बोधन (Vocative) में प्रथमा विभक्ति होती है, इसलिये सम्बोधन में शब्द का रूप प्रथमा के ऐसा होता है। परन्तु किसी २ शब्द के सम्बोधन के एकवचन में कुछ भिन्नता है, इसलिये एकवचन का रूप पृथक् दिखाया जायगा।

स्वरान्त शब्द (Cases ending in vowels)

पुंलिङ्ग (Masculine).

अकारान्त—गज (Elephant) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गजः	गजौ	गजाः
द्वितीया	गजम्	गजौ	गजान्
तृतीया	गजेन	गजाभ्याम्	गजैः

तीसरा दन्तमूल, नीचे दबाव से चौथा दन्तमूल ऐसा ही आगे भी जानो। अनुवादक।

चतुर्थी	गजाय	गजाभ्याम्	गजेभ्यः
पञ्चमी	गजात्	गजाभ्याम्	गजेभ्यः
षष्ठी	गजस्य	गजयोः	गजानाम्
सप्तमी	गजे	गजयोः	गजेषु
सम्बोधन	गज		

प्रायः समस्त अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द गज के सदृश होते हैं।

इकारान्त—मुनि (A sage) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहु
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधन	मुने		

पति और सखि शब्द के सिवाय समस्त इकारान्त पुंलिङ्ग शब्द (के रूप) मुनि शब्द के सदृश होते हैं।

पति (Lord, Husband) शब्द ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन ।
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	पते		

सखि (A friend) शब्द ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	सखे		

ईकारान्त-सुधी (A learned man) शब्द ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वितीया	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
चतुर्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पञ्चमी	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
षष्ठी	सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्
सप्तमी	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु

सम्बोधन सुधीः

अनेक पुंल्लिंग ईकारान्त शब्द सुधी शब्द के सदृश होते हैं ।

उकारान्त साधु (A Pious man) शब्द ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पञ्चमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्

सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	साधो		

प्रायः समस्त उकारान्त पुंलिंग शब्द साधु शब्द के सदृश होते हैं।

ऋकारान्त-दातृ (A giver) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातॄन्
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पञ्चमी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
षष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातॄणाम्
सप्तमी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	दातः		

भ्रातृ, पितृ, जामातृ, नृ आदि कतिपय के सिवाय सब ऋकारान्त पुंलिङ्ग शब्द (केवल) दातृ शब्द के सदृश होते हैं।

भ्रातृ (A brother) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भ्राता	भ्रातरौ	भ्र[illegible]

द्वितीया	भ्रातरम्	भ्रातरौ
सम्बोधन	भ्रातः	

इस के सिवाय और सब विभक्तियों में दातृ शब्द के सदृश रूप होते हैं।

पितृ, जामातृ, नृ आदि कई एक शब्द भ्रातृ शब्द के सदृश होते हैं; केवल नृ शब्द की षष्ठी के बहुवचन में नृणाम्, नॄणाम् दो रूप होते हैं।

ओकारान्त–गो (Ox) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
सम्बोधन	गौः		

सब ओकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द इसी प्रकार के होते हैं

स्त्रीलिङ्ग (Feminine)।

लता (A climbing or creeping plant.)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पञ्चमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	लते		

प्रायः सब आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द इसी प्रकार के होते हैं।

इकारान्त-मति (Intellect) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतीम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्

सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मतीः	मतिषु
सम्बोधन	मते		

सब इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द इसी प्रकार होते हैं।

× ईकारान्त–नदी (River) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	नदि		

श्री (Goddess of Grace) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै, श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः

पञ्चमी	धियाः, धियः	धीभ्याम्	धीभ्यः
षष्ठी	धियाः, धियः	धियोः	धीनाम्, धियाम्
सप्तमी	धियाम्, धियि	धियोः	धीषु
सम्बोधन	धीः		

दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों में कई एक नदी शब्द के सदृश और कई एक धी शब्द के सदृश हैं, केवल स्त्री शब्द (के रूप) कुछ विशेष हैं।

स्त्री (Woman) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः, स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
हे सम्बोधन	स्त्रि		

उकारान्त-धेनु (Milch cow) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः

तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनु-
पञ्चमी	धेन्वा, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनु-
षष्ठी	धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनू-
सप्तमी	धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु

सम्बोधन धेनो

सब उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द (केरूप) इसी प्रकार के होते हैं।

ऊकारान्त—वधू (Wife or Woman) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु

सम्बोधन वधू

भ्रू (The eye brow) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुव
प्रथमा	भ्रूः	भ्रुवौ	भ्रुवः

द्वितीया	भ्रुवम्	भ्रुवौ	भ्रुवः
तृतीया	भ्रुवा	भ्रूभ्याम्	भ्रूभिः
चतुर्थी	भ्रुवे, भ्रुवै	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्यः
पञ्चमी	भ्रुवाः,भ्रुवः	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्यः
षष्ठी	भ्रुवाः,भ्रुवः	भ्रुवोः	भ्रूणाम्,भ्रुवाम्
सप्तमी	भ्रुवाम्,भ्रुवि	भ्रुवोः	भ्रूषु
सम्बोधन	भ्रूः		

दीर्घ ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द में कईएक वधू शब्द के सदृश और कईएक भ्रू शब्द के सदृश हैं। सुभ्रू शब्द भ्रू शब्द के समान है, केवल सम्बोधन के एकवचन में सुभ्रु ह्रस्व उकारान्त विसर्गहीन पद होता है, इतना ही विशेष है।

ऋकारान्त–दुहितृ (A daughter) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दुहिता	दुहितरौ	दुहितरः
द्वितीया	दुहितरम्	दुहितरौ	दुहितॄः
तृतीया	दुहित्रा	दुहितृभ्याम्	दुहितृभिः
चतुर्थी	दुहित्रे	दुहितृभ्याम्	दुहितृभ्यः
पञ्चमी	दुहितुः	दुहितृभ्याम्	दुहितृभ्यः
षष्ठी	दुहितुः	दुहित्रोः	दुहितॄणाम्
सप्तमी	दुहितरि	दुहित्रोः	दुहितृषु
सम्बोधन	दुहितः		

स्वसृ शब्द के सिवाय समस्त ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द (के रूप) इसी प्रकार के होते हैं।

स्वसृ (Sister) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्व
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	
सम्बोधन	स्वसः		

इन के सिवाय सब विभक्ति में दुहितृ शब्द सदृश रूप होते हैं।

नपुंसक (क्लीव) लिङ्ग (Neuter)।

अकारान्त—फल (Fruit) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	
सम्बोधन	फल		

और २ विभक्ति के रूप पुलिङ्ग अकारान्त के सदृश होते हैं।

प्रायः सब अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द (रूप) इसी प्रकार के होते हैं।

इकारान्त—वारि (Water) शब्द ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु

सम्बोधन वारे, वारि

दधि आदि कतिपय शब्द के सिवाय प्रायः समस्त ह्रस्व इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द (के रूप) इसी प्रकार के होते हैं।

दधि (Coagulated milk) शब्द ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	दधि	दधिनी	दधीनि
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पञ्चमी	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्

सप्तमी दध्नि, दध्नो दध्निः दधिषु
सम्बोधन दधे, दधि

अक्षि, अस्थि और सक्थि शब्द (के रूप) ज्यों के त्यों इसी प्रकार के होते हैं।

उकारान्त—मधु (Honey) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	मधो, मधु		

प्रायः सब ह्रस्व उकारान्त क्लीबलिङ्ग शब्द (के रूप) इसी प्रकार के होते हैं।

व्यञ्जनान्त (Bases ending in consonants) शब्द

पुंलिङ्ग (Masculine)।

जकारान्त—सम्राज् (Emperor) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सम्राट्	सम्राजौ	सम्राजः

द्वितीया	सम्राजम्	सम्राजौ	सम्राजः
तृतीया	सम्राजा	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भिः
चतुर्थी	सम्राजे	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
पञ्चमी	सम्राजः	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
षष्ठी	सम्राजः	सम्राजोः	सम्राजाम्
सप्तमी	सम्राजि	सम्राजोः	सम्राट्सु
सम्बोधन	सम्राट्		

प्रायः सकल जकारान्त शब्द सम्राज् शब्द (के रूप) के सदृश होते हैं।

तकारान्त—भूभृत् (A mountain or a King) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः
द्वितीया	भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृतः
तृतीया	भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः
चतुर्थी	भूभृते	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
पञ्चमी	भूभृतः	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
षष्ठी	भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम्
सप्तमी	भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु
सम्बोधन	भूभृत्		

आत्मन, युवन, श्वन आदि कतिपय शब्द के सिवाय प्रायः सब नकारान्त शब्द राजन् शब्द के सदृश होते हैं।

आत्मन् (Soul or self) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	
पञ्चमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	आत्मन्		

जिन शब्दों के अन्त में अन् होवे और के आकार में म् अथवा व् संयुक्त रहे तो उन रूप आत्मन् शब्द के सदृश होते हैं।

युवन् (Young) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	युवा	युवानौ	युवानः
	युवानम्	युवानौ	यूनः

...तिया	यूना	युवभ्याम्	युवभि...
...र्थी	यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः
...चमी	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
...ी	यूनः	यूनोः	यूनाम्
...मी	यूनि	यूनोः	युवसु
...बोधन	युवन्		

श्वन् (Dog) शब्द।

...क	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
...थमा	श्वा	श्वानौ	श्वानः
...तीया	श्वानम्	श्वानौ	शुनः
...तीया	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
...र्थी	शुने	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
...मी	शुनः	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
...और ...ी	शुनः	शुनोः	शुनाम्
...ी	शुनि	शुनोः	श्वसु
...बोधन	श्वन्		

गुणिन् शब्द।

...चन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
...मा	गुणी	गुणिनौ	गुणिनः
...ीया	गुणिनम्	गुणिनौ	गुणिनः
...ीया	गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभि...

स्त्रीलिङ्ग (Feminine)।

चकारान्त–वाच् शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वाक्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पञ्चमी	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सम्बोधन	वाक्		

दूसरे २ शब्द के साथ योग करने से वाच् शब्द पुंलिङ्ग भी हो जाता है। तब भी उस का ऐसा ही रूप रहता है।

दकारान्त आपद् (Misfortune) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आपद्	आपदौ	आपदः
द्वितीया	आपदम्	आपदौ	आपदः
तृतीया	आपदा	आपद्भ्याम्	आपद्भिः
चतुर्थी	आपदे	आपद्भ्याम्	आपद्भ्यः
पञ्चमी	आपदः	आपद्भ्याम्	[illegible]

नकारान्त—धामन् शब्द ।

प्रथमा	धाम	धाम्नी, धामनी	धामानि
द्वितीया	धाम	धाम्नी, धामनी	धामानि
सम्बोधन	धाम	धामन्	

और और विभक्तियों में पुंलिङ्ग ऊधिमन् शब्द के सदृश (रूप) होते हैं; प्रायः सब नकारान्त शब्द (के रूप) इसी प्रकार के होते हैं।

कर्म्मन् (Action) शब्द ।

प्रथमा	कर्म्म	कर्म्मणी	कर्म्माणि
द्वितीया	कर्म्म	कर्म्मणी	कर्म्माणि
सम्बोधन	कर्म्म, कर्म्मन्		

और २ विभक्तियों में पुंलिङ्ग आत्मन् शब्द सदृश (रूप) होते हैं।

जिन शब्दों के अन्त में अन् हो और अन आकार में म् अथवा व् संयुक्त रहे तो उन शब्दों के रूप इसी प्रकार के होते हैं।

अहन् (Day) शब्द ।

	एकवचन	द्विवचन
प्रथमा	अहः	अह्नी, अहनी
द्वितीया	अहः	अह्नी, अहनी

तृतीया	अह्ना	अहोभ्याम्*	अहोभिः
चतुर्थी	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
पञ्चमी	अह्नः	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
षष्ठी	अह्नः	अह्नोः	अह्नाम्
सप्तमी	अह्नि, अहनि	अह्नोः	अहःसु
सम्बोधन	अहः		

सकारान्त—पयस् (Milk, water) शब्द।

प्रथमा	पयः	पयसी	पयांसि
द्वितीया	पयः	पयसी	पयांसि
सम्बोधन	पयः	पयसी	पयांसि

और सब विभक्तियों में वेधस् शब्द के सदृश (रूप) होते हैं, मनस्, चेतस् आदि प्रायः सब सकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द (के रूप) इसी प्रकार के होते हैं।

---

* इन रूपों के पढ़ते समय विद्यार्थियों को ध्यान देके देखना चाहिये कि संज्ञा शब्दों के रूप तृतीया, चतुर्थी तथा पञ्चमी के द्विवचन में सदा समान और षष्ठी तथा सप्तमी के द्विवचन में सर्वदा समान होते हैं। युष्मद् तथा अस्मद् शब्दों को छोड़ के शेष शब्दों की चतुर्थी और पञ्चमी बहुवचन में सर्वदा समान रूप होते हैं।

हविस् (Oblation) शब्द ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हविः	हविषी	हवींषि
द्वितीया	हविः	हविषी	हवींषि
तृतीया	हविषा	हविर्भ्याम्	हविर्भिः
चतुर्थी	हविषे	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
पञ्चमी	हविषः	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
षष्ठी	हविषः	हविषोः	हविषाम्
सप्तमी	हविषि	हविषोः	हविःषु
सम्बोधन	हविः		

सर्पिस् आदि सब इस् प्रत्ययान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार के होते हैं।

धनुस् (Bow) शब्द ।

प्रथमा	धनुः	धनुषी	धनूंषि
द्वितीया	धनुः	धनुषी	धनूंषि
तृतीया	धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः
चतुर्थी	धनुषे	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
पञ्चमी	धनुषः	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
षष्ठी	धनुषः	धनुषोः	धनुषाम्
सप्तमी	धनुषि	धनुषोः	धनुःषु
सम्बोधन	धनुः		

चक्षुस् तथा और २ इस प्रत्ययान्त न. लिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार के होते हैं।

सर्वनाम (Pronouns)

सर्व (All) शब्द—पुंलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
सम्बोधन	सर्व		

नपुंसक लिङ्ग ।

प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग के सदृश (रूप) होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः

द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु
सम्बोधन	सर्वे		

अन्य शब्द ठीक सर्व शब्द के सदृश हैं; केवल नपुंसक लिङ्ग की प्रथमा और द्वितीया के एक वचन में अन्यत् यह पद होता है।

पूर्व (Fast, prior) शब्द पुंल्लिङ्ग ।

प्रथमा	पूर्वः	पूर्वौ	पूर्वे, पूर्वाः
द्वितीया	पूर्वम्	पूर्वौ	पूर्वान्
तृतीया	पूर्वेण	पूर्वाभ्याम्	पूर्वैः
चतुर्थी	पूर्वस्मै	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः
पञ्चमी	पूर्वस्मात्, पूर्वात्	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः
षष्ठी	पूर्वस्य	पूर्वयोः	पूर्वेषाम्
सप्तमी	पूर्वस्मिन्, पूर्वे	पूर्वयोः	पूर्वेषु
सम्बोधन	पूर्व		

नपुंसक लिङ्ग ।

प्रथमा	पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि
द्वितीया	पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग के सदृश (रू
होते हैं; स्त्रीलिङ्ग में ठीक सर्व शब्द के सदृश होत
हैं; कुछ भी भेद नहीं है। पर, अपर, दक्षिण,
उत्तर आदि कई एक शब्द (के रूप) पूर्व शब्द
के सदृश होते हैं।

अस्मद् (I) शब्द।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान् नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

यह शब्द तीनों लिङ्ग में समान है कुछ भेद नहीं है।

युष्मद् (You, thou) शब्द।

प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

यह शब्द भी तीनों लिङ्ग में समान है कुछ भेद नहीं।

इदम् (This) शब्द-पुंलिङ्ग।

प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
	अस्मिन्	अनयोः	एषु

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

यद् (who, which) शब्द पुंलिङ्ग ।

प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

नपुंसक लिङ्ग ।

प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग के समान (रूप) होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग ।

प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

तद् (he, that) शब्द—पुंलिङ्ग।

प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

नपुंसक लिङ्ग।

प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

और शेष विभक्तियों में पुंलिङ्ग के समान (रूप) होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग।

प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

एतद् शब्द भी ठीक तद् शब्द के सदृश है, केवल एकार मात्र अधिक है और पुंलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग में प्रथमा के एकवचन में मूर्द्धन्य ष होता है। यथा, एषः, एषा।

अदस् (This or that) शब्द—पुंलिङ्ग।

प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

नपुंसक लिङ्ग।

प्रथमा	अदः	अमू	अमूनि
द्वितीया	अदः	अमू	अमूनि

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग के सदृश (रूप) होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग ।

प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमूः
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पञ्चमी	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
षष्ठी	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

संख्यावाचक शब्द ।

एक (One, some, few) शब्द ।

एक शब्द एकवचनान्त है, कहीं २ इसी अर्थ में बहुवचनान्त होता है। यह तीनों लिङ्ग में सर्व शब्द के सदृश है। कुछ भेद नहीं है।

अनेक (Many) शब्द ।

यह शब्द बहुवचनान्त है, तीनों लिङ्ग में सर्व शब्द के तुल्य है।

द्वि (Two) शब्द — द्विवचनान्त ।

	पुंलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग ।
	द्विवचन	द्विवचन
प्रथमा	द्वौ	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे

चतुर्थी पञ्चभ्यः
पञ्चमी पञ्चभ्यः
षष्ठी पञ्चानाम्
सप्तमी पञ्चसु

यह (शब्द) भी तीनों लिङ्ग में समान है।

सप्तन्, नवन्, दशन् आदि समस्त नकारान्त संख्या वाचक शब्द (के रूप) पञ्चन् शब्द के सदृश होते हैं।

अव्यय (Indeclinables) शब्द।

कितने शब्द इस प्रकार के होते हैं कि उन के उपर विभक्ति नहीं रहती; इस लिये वे शब्द ज्यों के त्यों रहते हैं कुछ परिवर्त्तन नहीं होता; केवल अन्त में स्थित र् और (दन्त्य) स् के स्थान में विसर्ग होता है। इन्हीं शब्दों को अव्यय कहते हैं। यथा, प्रातर्, अन्तर्, स्वर्, पुनर्, उच्चैस्, नीचैस्, शनैस्, नमस्, पुनरपि, पृथक्, विना, ऋते, स्वयम्, सायम्, वृथा, मृषा, दिष्ट्या, सह, सार्द्धम्, अलम्, अथ, एवम्, एव, नूनम्, धिक्, च, वा, तु, हि, यदि, अथवा, न, प्र, अप, सम्, नि, अव, अनु, निर्, दुर्, वि, अधि, सु, उत्, परि, प्रति, अभि, अति, अपि, उप, आ।

यदि क्रिया के सहित योग होवे तो प्र से लेकर

(८७) जिन सब स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्त में इन् रहता है उन के अन्त में ई होता है। यथा, कमलिन्, कमलिनी ; मालिन्, मालिनी; मानिन्, मानिनी ; शुभदायिन्,शुभदायिनी; मनोहारिन्, मनोहारिणी; चमत्कारिन, चमत्कारिणी ; मेधाविन्, मेधाविनी; मायाविन, मायाविनी इत्यादि।

(८८) जिन स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्त में ह्रस्व उ हो तो प्रायः उन के उकार के आगे विकल्प कर के ई होता है। यथा,मृदु,मृद्वी, मृदुः; साधु,साध्वी,साधुः; गुरु, गुर्वी, गुरुः ; लघु, लघ्वी, लघुः इत्यादि।

(८९) जिन स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्त में ऋ रहे तो ऋकार के आगे प्रायः ई होता है। यथा, कर्तृ, कर्त्री; धातृ, धात्री ; जनयितृ, जनयित्री; प्रसवितृ, प्रसवित्री इत्यादि।

कारक।

कारक छः प्रकार के हैं ; अपादान, संप्रदान, करण, अधिकरण, कर्म्म, कर्त्ता।

अपादान (Ablative)।

(९०) जिस से कोई वस्तु अथवा जीव विभक्त हो, डरे, ग्रहण करे अथवा उत्पन्न होवे उस को

अपादान कारक कहते हैं। अपादान कारक में पंचमी विभक्ति होती है। यथा, वृक्षात् पत्रम्पतति, वृक्ष से पत्ता गिरता है। व्याघ्रात् बिभेति, व्याघ्र से डरता है। सरोवरात् जलं गृह्णाति, सरोवर से जल लेता है। दुग्धात् घृतमुत्पद्यते, दूध से घी उत्पन्न होता है।

सम्प्रदान (Dative)।

(९१) जिस को कोई वस्तु दान की जावे उस को सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, दरिद्राय धनं देद-याम्, दरिद्र को धन दो। दीनेभ्यः अन्नं देहि, दुखियों को अन्न दो। मह्यं पुस्तकं देहि, हम को पुस्तक दो।

करण (Instrumental)।

(९२) जिस के द्वारा कर्त्ता का कार्य सिद्ध होता है उस को करण कारक कहते हैं। करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, हस्तेन गृह्णाति, हाथ से ग्रहण करता है। चक्षुषा पश्यति, आँख से देखता है। हलेन कर्षति, हल से चलाता है। दण्डेन ताड़यति, दण्ड से ताड़न करता है। ...नेन आदि निर्हरति, झाड़ू से आदि झुकाता है।

योग में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा, पापिनम् धिक्, पापी को धिक्कार है; कृपणम् धिक्, कृपण को धिक्कार है; गुरो माम्प्रति सदयो भव, हे गुरु मुझ पर दया करो; दीनम्प्रति दया उचिता, दीन के ऊपर दया करनी उचित है।

(९९) क्रिया के विशेषण में द्वितीया विभक्ति का एकवचन होता है और नपुंसक लिंग के समान रूप होता है। यथा, शीघ्रं गच्छति, शीघ्र चलता है; सत्वरम्धावति, शीघ्र दौड़ता है; मधुरम् हसति, मधुर हँसता है।

(१००) सह, सार्द्धम्, अलम्, किम् इत्यादि कई एक शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, रामो लक्ष्मणेन सह वनं जगाम, राम लक्ष्मण के साथ वन गये थे; केनापि सार्द्धम् विरोधो न कर्त्तव्यः, किसी के साथ झगड़ा करना उचित नहीं है; विवादेन अलम्, विवाद से प्रयोजन नहीं; कलहेन किम्, कलह से प्रयोजन क्या!

(१०१) निमित्त अर्थ में और नमः शब्द के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, ज्ञानाय अध्ययनम्, ज्ञान के लिए पढ़ना; सुखाय धनोपार्जनम्, सुख के लिये धन कमाना; परोपकाराय

सतां जीवनम्, पराये के उपकार के लिये सज्जनों का जीवन; सुखे गमः, सुख को गमाय; मित्रे गमः, मित्र को गमाय।

(१०२) हेतु अर्थ में तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, भयेन कम्पते, डर से कांपता है; क्रोधेन ताडयति, क्रोध से मारता है; दुःखात् रोदिति, दुःख के कारण रोता है।

(१०३) अन्य, पृथक् इत्यादि शब्दों के योग में और अपेक्षा अर्थ में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, मित्रात् कः परित्रातुं समर्थः, मित्र के बिना कौन रक्षा कर सकता है; इदम् अस्मात् पृथक्, यह इस से अलग है; धनात् विद्या गरीयसी, धन से विद्या श्रेष्ठ है।

(१०४) विना शब्द के योग में द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, विद्यां विना वृथा जीवनम्, विद्या के बिना जीवन व्यर्थ है; यत्नेन विना किमपि न सिध्यति, यत्न बिना कुछ सिद्ध नहीं होता, पापात् विना दुःखं न भवति, बिना पाप के दुःख नहीं होता।

(१०५) ऋते शब्द के योग में द्वितीया और पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, श्रमम् ऋते

विद्या न भवति, विना श्रम विद्या नहीं होती है। धर्मात् ऋते सुखं न भवति, विना धर्म सुख नहीं होता।

(१०६) सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, मम हस्तः, मेरा हाथ; तव पुत्रः, तेरा पुत्र; नद्याः जलम्, नदी का जल; वृक्षस्य शाखा, वृक्ष की शाखा; कोकिलस्य कलरवः, कोयल का मिष्ट शब्द; प्रभोरादेशः, प्रभु की आज्ञा।

(१०७) सम, तुल्य, समान, सदृश इत्यादि शब्दों के योग में तृतीया और षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, विद्यया समम् धनम् नास्ति, विद्या के समान धन नहीं; विनयस्य तुल्यो गुणो नास्ति, विनय के बराबर गुण नहीं है।

(१०८) जिस वाक्य में अनेक के मध्य में से एक वस्तु वा व्यक्ति की जाति गुण क्रिया या संज्ञा से अलगाना वा निश्चय किया जाय उसे निर्द्धारण कहते हैं। निर्द्धारण अर्थ में समुदायवाचक शब्द में षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती है। यथा, पर्वतानां हिमालयः श्रेष्ठः, पर्वतों में हिमालय श्रेष्ठ है; कविषु कालिदासः श्रेष्ठः, कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है।

विशेष्य (Noun) विशेषण (Adjective)।

(१०९) जिस के द्वारा किसी वस्तु वा जीव का बोध होता है उस को विशेष्य कहते हैं। यथा, गृहम्, जलम्, वृक्षः, लता, नौका, वस्त्रम्, पुस्तकम्, पृथ्वी, चन्द्रः, सूर्य्यः, नक्षत्रम्, शिशुः इत्यादि।

(११०) जिस के द्वारा विशेष्य का गुण और अवस्था प्रकाशित होती है उस को विशेषण कहते हैं विशेषण प्रायः विशेष्य के पूर्व रहता है। यथा, पुरातनम् गृहम्, निर्मलम् जलम्, फलवान् वृक्षः, पुष्पिता लता, भग्ना नौका, छिन्नम् वस्त्रम्, वस-दम् पुस्तकम्, गोलाकारा पृथ्वी, शीतलचन्द्रः, प्रदीप्तः सूर्य्यः, उज्ज्वलम् नक्षत्रम्, धार्मिकः पुरुषः, सुशीलः शिशुः।

कुछ विशेष्य शब्द पुंलिङ्ग, कुछ स्त्रीलिङ्ग और कुछ नपुंसक लिङ्ग होते हैं।

(१११) विशेष्य शब्द का जो लिङ्ग है वही लिङ्ग विशेषण शब्द का भी होता है। यथा, सुन्दरः शिशुः, सुन्दरी कन्या, सुन्दरम् गृहम्, चञ्चलः अश्वः, चञ्चला दीर्घग्रीवा, चञ्चलम् नयनम्, बुद्धिमान् पुरुषः, बुद्धिमती स्त्री, बुद्धिमत् कलत्रम्।

(११२) विशेष्य पद जिस वचन का रहता

(११५) धातु के ऊपर जो विभक्तियाँ होती हैं, उन को तिङ् कहते हैं। इसलिये क्रियावाचक पद को तिङन्त कहते हैं।

(११६) क्रिया तीन काल की होती है, वर्त्तमान, अतीत (भूत) और भविष्यत्। जो उपस्थित है, वह वर्त्तमान काल कहा जाता है। यथा, पश्यति, वह देखता है; पश्यामि, देखता हूँ; जो गत हो गया उसे अतीत काल कहते हैं। यथा, ददर्श, देखा, देखा है या देखा था; चकार, किया, किया है या किया था। जो होनेवाला है उसे भविष्यत् काल कहते हैं। यथा, गमिष्यामि, जाऊंगा, करिष्यामि, करूंगा।

(११७) क्रिया के तीन वचन होते हैं। एकवचन द्विवचन, बहुवचन। एकवचन से एक पुरुष की क्रिया समझी जाती है। द्विवचन से दो पुरुष की क्रिया समझी जाती है। बहुवचन से अनेक पुरुष की क्रिया समझी जाती है। यथा, गच्छामि, [illegible] गच्छावः, हम दोनों जाते हैं; गच्छामः, [illegible] हैं; पठिष्यामि, हम

है विशेषण पद भी उसी वचन का होता है, अर्थात् विशेष्य पद एकवचनान्त होने से विशेषण पद भी एकवचनान्त होता है, विशेष्य पद द्विवचनान्त होने से विशेषण पद भी द्विवचनान्त होता है और विशेष्य पद बहुवचनान्त होने से विशेषण पद भी बहुवचनान्त होता है। यथा, बलवान् सिंहः, बलवन्तौ सिंहौ, बलवन्तः सिंहाः, वेगवती नदी, वेगवत्यौ नद्यौ, वेगवत्यः नद्यः, निबिड़म् वनम्, निबिड़े वने, निबिड़ानि वनानि।

(१११) विशेष्य पद की जो विभक्ति होती है वही विभक्ति विशेषण पद की भी होती है। यथा, सुन्दरः शिशुः। सुन्दरम् शिशुम्। सुन्दरेण शिशुना। सुन्दराय शिशवे। सुन्दरात् शिशोः। सुन्दरस्य शिशोः। सुन्दरे शिशौ। निर्मलम् जलम्। निर्मलेन जलेन। निर्मलाय जलाय। निर्मलात् जलात्। निर्मलस्य जलस्य। निर्मले जले।

भविष्यत्काल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	हसिष्यति	हसिष्यसि	हसिष्यामि
द्विवचन	हसिष्यतः	हसिष्यथः	हसिष्यावः
बहुवचन	हसिष्यन्ति	हसिष्यथ	हसिष्यामः

अनुज्ञा ।

एकवचन	हसतु	हस	हसानि
द्विवचन	हसताम्	हसतम्	हसाव
बहुवचन	हसन्तु	हसत	हसाम

रुद् धातु—रोना, कानना ।

वर्त्तमानकाल ।

वन	रोदिति	रोदिषि	रोदिमि
	रुदितः	रुदिथः	रुदिवः
न	रुदन्ति	रुदिथ	रुदिमः

अतीतकाल ।

	रुरोद	रुरोदिथ	रुरोद
	रुरुदतुः	रुरुदथुः	रुरुदिव
बहुवचन	रुरुदुः	रुरुद	रुरुदिम

भविष्यत्काल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	रोदिष्यति	रोदिष्यसि	रोदिष्यामि
द्विवचन	रोदिष्यतः	रोदिष्यथः	रोदिष्यावः
बहुवचन	रोदिष्यन्ति	रोदिष्यथ	रोदिष्यामः

अनुज्ञा ।

एकवचन	रोदितु	रुदिहि	रोदानि
द्विवचन	रुदिताम्	रुदितम्	रोदाव
बहुवचन	रुदन्तु	रुदित	रोदाम

पत् धातु—पतन, गिरना ।

वर्तमानकाल ।

एकवचन	पतति	पतसि	पतामि
द्विवचन	पततः	पतथः	पतावः
बहुवचन	पतन्ति	पतथ	पतामः

अतीतकाल ।

एकवचन	पपात	पेतिथ	पपात, पपत
द्विवचन	पेततुः	पेतथुः	पेतिव
बहुवचन	पेतुः	पेत	पेतिम

भविष्यत्काल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	हसिष्यति	हसिष्यसि	हसिष्यामि
द्विवचन	हसिष्यतः	हसिष्यथः	हसिष्यावः
बहुवचन	हसिष्यन्ति	हसिष्यथ	हसिष्यामः

अनुज्ञा।

एकवचन	हसतु	हस	हसानि
द्विवचन	हसताम्	हसतम्	हसाव
बहुवचन	हसन्तु	हसत	हसाम

रुद् धातु—रोना, कानना।

वर्त्तमानकाल।

एकवचन	रोदिति	रोदिषि	रोदिमि
द्विवचन	रुदितः	रुदिथः	रुदिवः
बहुवचन	रुदन्ति	रुदिथ	रुदिमः

अतीतकाल।

एकवचन	रुरोद	रुरोदिथ	रुरोद
द्विवचन	रुरुदतुः	रुरुदथुः	रुरुदिव
बहुवचन	रुरुदुः	रुरुद	रुरुदिम

भविष्यत्काल

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पतिष्याति	पतिष्यासि	पतिष्यामि
द्विवचन	पतिष्यतः	पतिष्यथः	पतिष्यावः
बहुवचन	पतिष्यन्ति	पतिष्यथ	पतिष्यामः

अनुज्ञा।

एकवचन	पततु	पत	पतानि
द्विवचन	पतताम्	पततम्	पताव
बहुवचन	पतन्तु	पतत	पताम

कृ धातु—करण, करना। (सकर्मक)

वर्त्तमानकाल।

एकवचन	करोति	करोषि	करोमि
द्विवचन	कुरुतः	कुरुथः	कुर्वः
बहुवचन	कुर्वन्ति	कुरुथ	कुर्मः

अतीतकाल।

एकवचन	चकार	चकर्थ	चकार, चकर
द्विवचन	चक्रतुः	चक्रथुः	चकृव
बहुवचन	चक्रुः	चक्र	चकृम

भविष्यत्काल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गमिष्यति	गमिष्यसि	गमिष्यामि
द्विवचन	गमिष्यतः	गमिष्यथः	गमिष्यावः
बहुवचन	गमिष्यन्ति	गमिष्यथ	गमिष्यामः

अनुज्ञा।

एकवचन	गच्छतु	गच्छ	गच्छानि
द्विवचन	गच्छताम्	गच्छतम्	गच्छाव
बहुवचन	गच्छन्तु	गच्छत	गच्छाम

/ श्रु धातु–श्रवण, सुनना।

वर्त्तमानकाल।

एकवचन	शृणोति	शृणोषि	शृणोमि
द्विवचन	शृणुतः	शृणुथः	शृण्वः, शृणुवः
बहुवचन	शृण्वन्ति	शृणुथ	शृण्मः, शृणुमः

अतीतकाल।

एकवचन	शुश्राव	शुश्रोथ	शुश्राव, शुश्रव
द्विवचन	शुश्रुवतुः	शुश्रुवथुः	शुश्रुव
बहुवचन	शुश्रुवुः	शुश्रुव	शुश्रुम

भविष्यत्काल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यामि
द्विवचन	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यावः
बहुवचन	ग्रहीष्यन्ति	ग्रहीष्यथ	ग्रहीष्यामः

अनुज्ञा ।

एकवचन	गृह्णातु	गृहाण	गृह्णानि
द्विवचन	गृह्णीताम्	गृह्णीतम्	गृह्णाव
बहुवचन	गृह्णन्तु	गृह्णीत	गृह्णाम

प्रच्छ धातु—पूछना ।

वर्त्तमानकाल ।

एकवचन	पृच्छति	पृच्छसि	पृच्छामि
द्विवचन	पृच्छतः	पृच्छथः	पृच्छावः
बहुवचन	पृच्छन्ति	पृच्छथ	पृच्छामः

अतीतकाल ।

एकवचन	पप्रच्छ	पप्रच्छिथ, पप्रष्ठ ।	पप्रच्छ
द्विवचन	पप्रच्छतुः	पप्रच्छथुः	पप्रच्छिव
बहुवचन	पप्रच्छुः	पप्रच्छ	पप्रच्छिम

भविष्यत्काल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यामि
द्विवचन	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यावः
बहुवचन	प्रक्ष्यन्ति	प्रक्ष्यथ	प्रक्ष्यामः

अनुज्ञा ।

एकवचन	पृच्छतु	पृच्छ	पृच्छानि
द्विवचन	पृच्छताम्	पृच्छतम्	पृच्छाव
बहुवचन	पृच्छन्तु	पृच्छत	पृच्छाम

ब्रू धातु—कथन, बोलना ।

वर्त्तमानकाल ।

एकवचन	ब्रवीति	ब्रवीषि	ब्रवीमि
द्विवचन	ब्रूतः	ब्रूथः	ब्रूवः
बहुवचन	ब्रुवन्ति	ब्रूथ	ब्रूमः

अतीतकाल ।

एकवचन	उवाच	उवचिथ, उवक्थ	उवाच, उवच
द्विवचन	ऊचतुः	ऊचथुः	ऊचिव
बहुवचन	ऊचुः	ऊच	ऊचिम

अनुज्ञा ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पिबतु	पिब	पिबानि
द्विवचन	पिबताम्	पिबतम्	पिबाव
बहुवचन	पिबन्तु	पिबत	पिबाम

इष् धातु—इच्छा ।

एकवचन	इच्छति	इच्छसि	इच्छामि
द्विवचन	इच्छतः	इच्छथः	इच्छावः
बहुवचन	इच्छन्ति	इच्छथ	इच्छामः

भूतकाल ।

एकवचन	इयेष	इयेषिथ	इयेष
द्विवचन	ईषतुः	ईषथुः	ईषिव
बहुवचन	ईषुः	ईष	ईषिम

भविष्यत्काल

एकवचन	एषिष्यति	एषिष्यसि	एषिष्यामि
द्विवचन	एषिष्यतः	एषिष्यथः	एषिष्यावः
बहुवचन	एषिष्यन्ति	एषिष्यथ	एषिष्यामः

अनुज्ञा ।

एकवचन	इच्छतु	इच्छ	इच्छानि
द्विवचन	इच्छताम्	इच्छतम्	इच्छाव
बहुवचन	इच्छन्तु	इच्छत	इच्छाम

ज्ञा धातु—ज्ञान, जानना।

वर्तमानकाल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जानाति	जानासि	जानामि
द्विवचन	जानीतः	जानीथः	जानीवः
बहुवचन	जानन्ति	जानीथ	जानीमः

अतीतकाल।

एकवचन	जज्ञौ	जज्ञिथ, जज्ञाथ	जज्ञौ
द्विवचन	जज्ञतुः	जज्ञथुः	जज्ञिव
बहुवचन	जज्ञुः	जज्ञ	जज्ञिम

भविष्यत्काल

एकवचन	ज्ञास्यति	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यामि
द्विवचन	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यावः
बहुवचन	ज्ञास्यन्ति	ज्ञास्यथ	ज्ञास्यामः

अनुज्ञा।

एकवचन	जानातु	जानीहि	जानानि
द्विवचन	जानीताम्	जानीतम्	जानाव
बहुवचन	जानन्तु	जानीत	जानाम

अनुज्ञा ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पिबतु	पिब	पिबानि
द्विवचन	पिबताम्	पिबतम्	पिबाव
बहुवचन	पिबन्तु	पिबत	पिबाम

इष् धातु—इच्छा ।

एकवचन	इच्छति	इच्छसि	इच्छामि
द्विवचन	इच्छतः	इच्छथः	इच्छावः
बहुवचन	इच्छन्ति	इच्छथ	इच्छामः

अतीतकाल ।

एकवचन	इयेष	इयेषिथ	इयेष
द्विवचन	ईषतुः	ईषथुः	ईषिव
बहुवचन	ईषुः	ईष	ईषिम

भविष्यत्काल

एकवचन	एषिष्यति	एषिष्यसि	एषिष्यामि
द्विवचन	एषिष्यतः	एषिष्यथः	एषिष्यावः
बहुवचन	एषिष्यन्ति	एषिष्यथ	एषिष्यामः

अनुज्ञा ।

एकवचन	इच्छतु	इच्छ	इच्छानि
द्विवचन	इच्छताम्	इच्छतम्	इच्छाव
बहुवचन	इच्छन्तु	इच्छत	इच्छाम

प्रपूर्वक आप् धातु—प्राप्ति, पाना।

वर्तमानकाल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	प्राप्नोति	प्राप्नोषि	प्राप्नोमि
द्विवचन	प्राप्नुतः	प्राप्नुथः	प्राप्नुवः
बहुवचन	प्राप्नुवन्ति	प्राप्नुथ	प्राप्नुमः

अतीतकाल।

एकवचन	प्राप	प्रापिथ	प्राप
द्विवचन	प्रापतुः	प्रापथुः	प्रापिव
बहुवचन	प्रापुः	प्राप	प्रापिम

भविष्यत्काल।

एकवचन	प्राप्स्यति	प्राप्स्यसि	प्राप्स्यामि
द्विवचन	प्राप्स्यतः	प्राप्स्यथः	प्राप्स्यावः
बहुवचन	प्राप्स्यन्ति	प्राप्स्यथ	प्राप्स्यामः

अनुज्ञा।

एकवचन	प्राप्नोतु	प्राप्नुहि	प्राप्नवानि
द्विवचन	प्राप्नुताम्	प्राप्नुतम्	प्राप्नवाव
बहुवचन	प्राप्नुवन्तु	प्राप्नुत	प्राप्नवाम

और कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति रहे तो उन को कर्तृवाच्य प्रयोग कहते हैं। यथा, कुम्भकारः घटङ्करोति, कुम्हार घड़ा बनाता है; देवदत्तः ग्रामङ्गच्छति, देवदत्त गांव को जाता है; शिशुः पुस्तकं पठति, बालक पुस्तक पढ़ता है; अश्वः जलं पिबति, घोड़ा जल पीता है।

(१२२) कर्तृवाच्य में कर्त्ता का जो वचन, होता है, वही वचन क्रिया में भी होता है, अर्थात् कर्त्ता एकवचनान्त होने से क्रिया में एकवचन होता है, कर्त्ता द्विवचनान्त होने से क्रिया में द्विवचन होता है, कर्त्ता बहुवचनान्त होने से क्रिया में बहुवचन होता है। यथा, कुम्भकारः घटङ्करोति, कुम्भकारौ घटं कुरुतः, कुम्भकाराः घटं कुर्वन्ति; शिशुः पुस्तकं पठति, शिशू पुस्तकं पठतः, शिशवः पुस्तकं पठन्ति।

कर्मवाच्य।

(१२३) जब कर्तृकारक में तृतीया विभक्ति और कर्म कारक में प्रथमा विभक्ति रहे, तो उन को कर्मवाच्य प्रयोग कहते हैं। यथा, कुम्भकारेण घटः क्रियते, कुम्हार से घड़ा बनाया जाता है। शिष्येण गुरुः पृच्छ्यते, शिष्य से गुरु पूछा जाता

कृदन्त।

(१२६) धातु के उत्तर तुम्, त्वा आदि कई एक प्रत्यय होते हैं। उन्हीं प्रत्ययों को कृत् कहते हैं। कृत् प्रत्यय करने से जो शब्द सिद्ध होते हैं, वे प्रायः क्रिया के सदृश अर्थप्रकाश करते हैं। कृत् प्रत्यय अनेक हैं, उन में से कईएक का विषय संक्षेप (स्थूल रूप) से लिखा जाता है।

तुम्।

(१२७) निमित्त अर्थ में धातु के उत्तर तुम् प्रत्यय होता है। यथा, दा धातु—तुम्, दातुम्; देने के निमित्त। स्था धातु—तुम्, स्थातुम्; ठहरने के निमित्त। पा धातु-तुम्, पातुम्; पीने के निमित्त। हन् धातु-तुम्, हन्तुम्; मारने के लिये। गम् धातु-तुम्, गन्तुम्; जाने के निमित्त। ग्रह् धातु-तुम्, ग्रहीतुम्; ग्रहण करने के निमित्त। कृ धातु-तुम्, कर्तुम्; करने के लिये। वच् धातु—तुम्, वक्तुम्; कहने के लिये। जि धातु-तुम्, जेतुम्; जय करने के निमित्त। दृश् धातु-तुम्, द्रष्टुम्; देखने के लिये। चिन्ति धातु-तुम्, चिन्तयितुम्; चिन्ता करने के लिये। भुज् धातु—तुम्, भोक्तुम्, खाने के निमित्त इत्यादि।

स्मृ धातु—यप्, संस्मृत्य; स्मरण कर के, स्मरणान्तर। प्र-नम् धातु-यप्, प्रणम्य, प्रणत्य; प्रणाम कर के; प्रणामानन्तर।

(१३०) तुम्, त्वा और यप्, प्रत्यय होने से जो शब्द सिद्ध होते हैं, वे अव्यय कहलाते हैं। प्रयोग करने के समय इन शब्दों में प्रथमा विभक्ति का एकवचन होता है।

तव्य, अनीय, य।

(१३१) भविष्यत्काल में धातु के उत्तर कर्मवाच्य और भाववाच्य में तव्य, अनीय और य, ये तीन प्रत्यय होते हैं। इन प्रत्ययों से जो शब्द सिद्ध होते हैं उन के रूप पुंलिङ्ग में गज शब्द के सदृश, स्त्रीलिङ्ग में लता शब्द के सदृश, और नपुंसकलिङ्ग में फल शब्द के सदृश होते हैं।

(१३२) तव्य, अनीय, य, इन प्रत्ययों का किसी २ स्थल में केवल धातु के साथ योग होता है; किसी २ स्थल में धातु का आकार कुछ बदल जाता है। यथा, दा धातु—तव्य, दातव्यम्; अनीय, दानीयम्; य, देयम्। जि धातु-जेतव्यम्, जयनीयम्, जेयम्। शी धातु-शयितव्यम्, शयनीयम्, शेयम्। श्रु धातु-श्रोतव्यम्, श्रवणीयम्,

(१३८) अकर्मक धातु के उत्तर और रुह् आदि कई एक सकर्मक धातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में त प्रत्यय होता है और त प्रत्यय करने से जो शब्द सिद्ध होता है वह कर्त्ता का विशेषण होता है। यथा, मृ धातु, पुरुषोमृतः, पुरुष मर गया; स्त्री मृता, स्त्री मर गई; अपत्यं मृतम्, सन्तान मर गई। भू धातु, भूतः; स्था धातु, स्थितः; भी धातु, भीतः; जागृ धातु, जागरितः; गम् धातु, गतः; स गृहं गतः, वह घर गया; रुह् धातु, रूढः; वानरो वृक्षमारूढः, वानर वृक्ष पर चढ़ गया।

(१३९) अकर्मक और सकर्मक दोनों धातुओं के उत्तर भाववाच्य में त प्रत्यय होता है। भाववाच्य में प्रत्यय करने से जो शब्द सिद्ध होते हैं, उन शब्दों का रूप सर्वदा नपुंसक लिङ्ग की प्रथमा विभक्ति के एकवचन के समान होता है। यथा, मया जितम्, मैं ने जीता। तेन कुत्र स्थितम्, वह कहां रहा, त्वया दृष्टम्, तुम ने देखा। शिशुना रुदितम्, लड़के ने रोदन किया; मया भुक्तम्, मैं ने खाया; तेन जागरितम्, वह जागा; चौरेण पलायितम्, चोर भागा।

—•—